परिणामस्वरूप इनके मध्य संयोगिक सम्बन्ध विद्यमान है। ह्यूम कहता है कि ऐसा हो सकता है कि भविष्य में कोई ब्रह्माण्डीय परिवर्तन ऐसा हो जाए कि आग के साथ पानी के फव्वारे छूटे।

ह्यूम के अनुसार, परम्परागत कारणता सिद्धान्त के समर्थकों का यह विचार कि हमारी प्रकृति में एकरूपता है, यह पूर्व मानित सत्य है तथा एक मनोवैज्ञानिक कल्पना का परिणाम है, जो धारणाओं के नियतत्व, अनुक्रम तथा निकटता के कारण पैदा हुआ है। इस नियतत्व, अनुक्रम तथा निकटता को देखकर प्रकृति में एकरूपता तथा दो भिन्न धारणाओं के बीच अनिवार्यता की कल्पना कर लेना हमारी मानसिक आदत का परिणाम है।